प्रारंभिक परीक्षा

प्रमुख उद्योगों का सूचकांक (ICI)

संदर्भ

केंद्र ने प्रमुख उद्योगों के सूचकांक (ICI) की एक संशोधित श्रृंखला जारी की।

प्रमुख उद्योगों के सूचकांक (ICI) के बारे में

- **उद्देश्य:** एक मासिक सूचकांक जो प्रमुख बुनियादी ढांचा उद्योगों के प्रदर्शन को मापता है, जो औद्योगिक गतिविधि के एक प्रमुख संकेतक के रूप में कार्य करता है।
- **संकलन:** आर्थिक सलाहकार कार्यालय (OEA), उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (DPIIT), वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा जारी किया जाता है।
- **कवरेज:** संशोधित श्रृंखला में नौ प्रमुख क्षेत्र शामिल हैं - कोयला, कच्चा तेल, प्राकृतिक गैस, रिफाइनरी उत्पाद, उर्वरक, इस्पात, सीमेंट, बिजली और लौह अयस्क।
- **आधार वर्ष और कवरेज:** आधार वर्ष को 2011-12 से अद्यतन कर 2022-23 कर दिया गया है और लौह अयस्क को नौवें प्रमुख उद्योग के रूप में जोड़ा गया है।
- **कार्यप्रणाली में बदलाव:** यह इस्पात उत्पादन को सकल उत्पादन के आधार पर मापता है और दोहरी गणना को समाप्त करने के लिए वाशड (धुले हुए) और मिडलिंग (मध्यवर्ती) कोयले को छोड़कर केवल कच्चे कोयले का उपयोग करके कोयला उत्पादन को मापता है।
- **संशोधित भारांक (Weights):** औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) के साथ संरेखित करने के लिए बिजली का भारांक (30.932%) बढ़ाया गया है, जबकि कोयला (5.596%), प्राकृतिक गैस (3.841%), और रिफाइनरी उत्पादों (22.572%) के भारांक को कम किया गया है।

राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा बोर्ड (NRSB)

संदर्भ

2024 में सड़क दुर्घटनाओं में रिकॉर्ड मौतों के बाद केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा बोर्ड (NRSB) का गठन किया।

राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा बोर्ड (NRSB) के बारे में

- **प्रकार:** मोटर वाहन अधिनियम, 1988 के तहत गठित एक वैधानिक सलाहकार निकाय।
- **संरचना:** इसमें सड़क सुरक्षा विशेषज्ञों के साथ-साथ केंद्र और राज्य सरकारों के प्रतिनिधि शामिल हैं।
- **कार्य:** सड़क सुरक्षा में सुधार के लिए सड़क सुरक्षा मानकों, नीतियों और उपायों पर केंद्र और राज्य सरकारों को सलाह देता है।

- **विकास:** एक राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा निकाय के लिए सुंदर समिति (2007) की सिफारिश से उत्पन्न हुआ; एस. राजशेखरन बनाम भारत संघ मामले में निर्देशों के बाद इसके संचालन में तेजी आई।

क्रिप्टोकरेंसी ओवर-द-काउंटर (OTC) ट्रेडिंग घोटाला

संदर्भ

प्रवर्तन निदेशालय (ED) ने धन शोधन निवारण अधिनियम (PMLA), 2002 के तहत एक कथित क्रिप्टोकरेंसी OTC ट्रेडिंग घोटाले की मनी लॉन्ड्रिंग (धन शोधन) जांच शुरू की।

क्रिप्टोकरेंसी ओवर-द-काउंटर (ओटीसी) ट्रेडिंग घोटाले के बारे में:

- **ओवर-द-काउंटर (OTC) ट्रेडिंग का अर्थ है जहां खरीदार और विक्रेता क्रिप्टो एक्सचेंज का उपयोग करने के बजाय सीधे एक-दूसरे के साथ सौदा करते हैं।**
- **घोटाला कैसे काम करता था?**
    - **झूठा वादा:** आरोपियों ने निवेशकों को ओवर-द-काउंटर (OTC) सौदों के माध्यम से रियायती क्रिप्टोकरेंसी टोकन की पेशकश की, और दावा किया कि उनके पास कम कीमतों पर टोकन खरीदने की विशेष पहुंच है।
    - **धोखाधड़ी:** धन प्राप्त करने के बाद, उन्होंने वादे के अनुसार टोकन नहीं दिए या केवल आंशिक रूप से दिए और धन के लेन-देन के निशान (मनी ट्रेल) को छिपाने के लिए क्रिप्टोकरेंसी वॉलेट के माध्यम से धन हस्तांतरित कर दिया।

डिस्पोरम योबिनोरम (DISPORUM YOBINORUM)

संदर्भ

वनस्पति विज्ञानियों ने पुष्पीय पौधे (फूल वाले पौधे) की एक नई प्रजाति, 'डिस्पोरम योबिनोरम' की खोज की है।

डिस्पोरम योबिनोरम के बारे में

- **प्रकार:** अरुणाचल प्रदेश में खोजी गई पुष्पीय पौधे की एक नई प्रजाति।
- **नामकरण:** वैज्ञानिक अनुसंधान में उनके समर्थन को मान्यता देते हुए, इसका नाम अरुणाचल प्रदेश की सबसे छोटी स्वदेशी जनजातियों में से एक, योबिन समुदाय के नाम पर रखा गया है।

हरिश्चंद्रगढ़ किला

संदर्भ

महाराष्ट्र में हरिश्चंद्रगढ़ किले के पास हुए भूस्खलन में किले से नीचे उतर रहे पर्यटक घायल हो गए।

हरिश्चंद्रगढ़ किले के बारे में

- **अवस्थिति:** महाराष्ट्र के अहमदनगर (अहिल्यानगर) जिले में पश्चिमी घाट में स्थित एक पहाड़ी किला।

- **इतिहास:** इसका इतिहास कलचुरी राजवंश के तहत छठी शताब्दी का है, बाद में मुगलों द्वारा नियंत्रित किया गया और 1747 में मराठों द्वारा इस पर कब्ज़ा कर लिया गया।
- **धार्मिक महत्व:** इसमें हरिश्चंद्रेश्वर मंदिर स्थित है, जो हेमाडपंथी शैली का एक शिव मंदिर है।
- **प्राकृतिक स्थल:** यह कोंकण कड़ा (Konkan Kada) के लिए प्रसिद्ध है, जो एक अर्धवृत्ताकार लटकती हुई चट्टान है, जहाँ से कोंकण क्षेत्र का विहंगम दृश्य दिखाई देता है।
- **अनूठी घटना:** यहाँ अनुकूल मौसम की स्थिति में 'ब्रोकन स्पेक्टर' (Brocken Spectre) नामक घटना देखी जा सकती है, जहाँ किसी व्यक्ति की परछाई इंद्रधनुषी प्रभामंडल से घिरे बादलों पर दिखाई देती है।

स्माइल (SMILE) योजना

संदर्भ

स्माइल (SMILE) योजना ने भारत के 216 शहरों में भीख मांगने में लगे 10,200 से अधिक व्यक्तियों का पुनर्वास किया है।

स्माइल योजना के बारे में

- **प्रकृति:** सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय की एक केंद्रीय क्षेत्रक (सेंट्रल सेक्टर) अम्ब्रेला योजना।
- **उद्देश्य:** अभिसरण-आधारित पुनर्वास दृष्टिकोण के माध्यम से "भिक्षा वृत्ति मुक्त भारत" (भीख मांगने से मुक्त भारत) के दृष्टिकोण को प्राप्त करना।
- **कवरेज:** इसमें दो उप-योजनाएं शामिल हैं- ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के कल्याण के लिए व्यापक पुनर्वास और भिक्षावृत्ति के कार्य में लगे व्यक्तियों का व्यापक पुनर्वास।

प्रमुख विशेषताएँ

- **कार्यान्वयन:** केंद्र सरकार, राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों, जिला प्रशासनों, शहरी स्थानीय निकायों, नगर निगमों और कार्यान्वयन एजेंसियों के बीच सहयोग के माध्यम से कार्यान्वित किया जाता है।
- **लक्ष्य:** 2030-31 तक 295 शहरों को कवर करने का लक्ष्य है, जिसमें महानगरीय, धार्मिक, पर्यटन और विरासत शहरों को प्राथमिकता दी जाएगी।
- **डिजिटल प्लेटफॉर्म:** पुनर्वास केंद्रों और आश्रय गृहों के ऑनलाइन पंजीकरण, निगरानी और ट्रैकिंग के लिए स्माइल-भिक्षावृत्ति राष्ट्रीय पोर्टल (SMILE-Beggary National Portal) द्वारा समर्थित।

महत्व

- **सामाजिक समावेशन:** कमजोर और हाशिए पर रहने वाले व्यक्तियों के पुनर्वास, आजीविका और सामाजिक पुनर्समेकन (social reintegration) को बढ़ावा देता है।

निर्दिष्ट गैर-वित्तीय परिसंपत्तियां (SNFA)

संदर्भ

भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) ने निर्दिष्ट गैर-वित्तीय परिसंपत्तियों (SNFA) के लिए एक रूपरेखा पेश की, जिसमें बैंकों द्वारा उनके अधिग्रहण, प्रबंधन और निपटान को निर्धारित किया गया है।

निर्दिष्ट गैर-वित्तीय परिसंपत्तियों (एसएनएफए) के बारे में

- **परिभाषा:** बैंकों द्वारा डिफॉल्टर (चूककर्ता) उधारकर्ताओं से बकाया ऋणों के पूर्ण या आंशिक निपटान में अधिग्रहित की गई अचल परिसंपत्तियां।
- **पात्रता:** ऋण को गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (NPA) घोषित किए जाने के बाद ही संपत्ति को एसएनएफए के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।
- **निपटान:** SNFAs को मुख्य रूप से सरफेसी अधिनियम (SARFAESI Act) के सिद्धांतों का पालन करते हुए सार्वजनिक नीलामी के माध्यम से बेचा जाना चाहिए, और इसे मूल उधारकर्ता या संबंधित पक्षों को वापस नहीं बेचा जा सकता है।
- **बैंक की नीति:** वाणिज्यिक बैंक एक आंतरिक नीति बनाते हैं, जिसमें संपत्ति प्राप्त करने से पहले पात्रता मानदंड, अनुमोदन प्रक्रियाओं और वसूली के प्रयासों को स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट किया जाना चाहिए।
- **लेखांकन:** SNFAs को बैंक की बैलेंस शीट में दावों की संतुष्टि में अधिग्रहित गैर-बैंकिंग संपत्तियों के रूप में अलग से दिखाया जाएगा, और यह सकल या शुद्ध NPA का हिस्सा नहीं होंगे।

सलाल बांध

संदर्भ

भारी वर्षा के कारण जल प्रवाह में तेज वृद्धि के बाद अधिकारियों ने सलाल बांध के सभी गेट खोल दिए।

सलाल बांध के बारे में

- **अवस्थिति:** जम्मू और कश्मीर के रियासी जिले में चिनाब नदी पर स्थित एक रन-ऑफ-द-रिवर जलविद्युत परियोजना।
- **इतिहास:** यह परियोजना सिंधु जल संधि व्यवस्था के तहत भारत द्वारा निर्मित पहली जलविद्युत परियोजना के रूप में 1987 में चालू हुई थी।
- **स्वामित्व:** नेशनल हाइड्रोइलेक्ट्रिक पावर कॉर्पोरेशन (NHPC) द्वारा विकसित और संचालित।

समाचार में स्थान

ओकिनोटोरि द्वीप(OKINOTORI ISLAND)

संदर्भ

एक चीनी नौसेना विध्वंसक (destroyer) ने रूसी नौसैनिक जहाजों के साथ मिलकर जापान के ओकिनोटोरि द्वीप के पास लाइव-फायर अभ्यास किया, जो जापान द्वारा किया गया इस तरह का पहला खुलासा है।

ओकिनोटोरि द्वीप के बारे में

- जापान का सबसे दक्षिणी क्षेत्र, ओकिनोटोरि, फिलीपीन सागर में एक निर्जन प्रवाल भित्ति (coral atoll) है, जिसे ओगासावारा द्वीप समूह के हिस्से के रूप में प्रशासित किया जाता है।
- यह कर्क रेखा के दक्षिण में पलाऊ-क्यूशू रिज (Palau–Kyushu Ridge) पर ताइवान और गुआम के बीच लगभग मध्य में स्थित है, जो इसे प्रशांत महासागर में महत्वपूर्ण रणनीतिक महत्व प्रदान करता है।

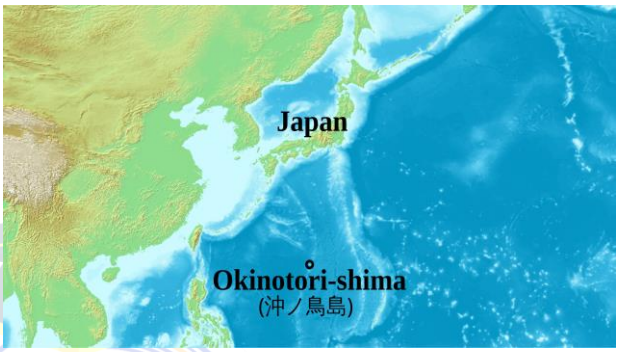

मुख्य परीक्षा

बंधुआ मजदूरी

संदर्भ

उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में एक कारखाने से 12 बंधुआ मजदूरों को छुड़ाए जाने की घटना ने बंधुआ श्रम प्रणाली (उन्मूलन) अधिनियम, 1976 के तहत इसके उन्मूलन के बावजूद बंधुआ मजदूरी के जारी रहने पर चिंताओं को फिर से जगा दिया है।

भारत की अनौपचारिक अर्थव्यवस्था बंधुआ मजदूरी के अनुकूल परिस्थितियों को क्यों उत्पन्न करती है?

- **वित्तीय बहिष्करण:** संस्थागत ऋण तक सीमित पहुंच गरीब परिवारों को संकट या मौसमी बेरोजगारी के दौरान अनौपचारिक अग्रिमों (पेशगी) पर निर्भर रहने के लिए मजबूर करती है। यह प्रारंभिक ऋण संबंध बनाता है जो श्रमिकों को अनौपचारिक श्रम बाजारों में खींचता है।
- **ऋण संपार्श्विकरण (Debt collateralisation):** लिखित अनुबंधों के अभाव में, अग्रिम राशि साधारण ऋण के बजाय श्रम के लिए संपार्श्विक (collateral) बन जाती है। नियोक्ता एकतरफा रूप से मजदूरी, पुनर्भुगतान, ब्याज और काम करने की स्थिति निर्धारित कर सकते हैं, जिससे अस्थायी कर्ज दीर्घकालिक श्रम बंधन में बदल जाता है।
    - **उदाहरण**: पंजाब और हरियाणा में ईंट भट्ठा श्रमिकों को अक्सर सीज़न के अंत में अपने बकाया कर्ज को बढ़ा हुआ मिलता है, जिससे उनका बंधन अगले उत्पादन चक्र तक बढ़ जाता है।
- **श्रम मध्यस्थता:** प्रवासी श्रमिक रोजगार, आवास, परिवहन और बुनियादी जरूरतों के लिए श्रम ठेकेदारों पर निर्भर होते हैं। नियंत्रण का यह संकेंद्रण उनकी गतिशीलता और सौदेबाजी की शक्ति को सीमित करता है, जिससे बंधुआ कार्य से बचना मुश्किल हो जाता है।
    - **उदाहरण**: ओडिशा-आंध्र प्रदेश के ईंट भट्ठा प्रवासियों ने बताया है कि ठेकेदार श्रमिकों को काम छोड़ने से रोकने के लिए उनके आधार कार्ड अपने पास रख लेते हैं।
- **निकास बाधाएं:** जाति पदानुक्रम और प्रमुख नियोक्ता नेटवर्क वैकल्पिक नौकरियों, भूमि पट्टों और स्थानीय सहायता प्रणालियों तक पहुंच को प्रतिबंधित करते हैं। इसलिए बंधुआ मजदूरी छोड़ने वाले श्रमिकों को सामाजिक बहिष्कार और आजीविका के नुकसान का सामना करना पड़ता है, जो उनकी निर्भरता को और मजबूत करता है।
    - **उदाहरण**: NHRC ने प्रलेखित किया है कि तमिलनाडु में दलित परिवारों को बंधुआ कृषि कार्य छोड़ने के बाद सिंचाई के पानी और स्थानीय रोजगार से वंचित कर दिया गया था।
- **पुनर्वास विफलता:** विलंबित रिलीज (मुक्ति) प्रमाण पत्र, कमजोर जिला सतर्कता समितियां और स्रोत तथा गंतव्य राज्यों के बीच खराब समन्वय पुनर्वास सहायता में देरी करते हैं। तत्काल आजीविका समर्थन के बिना, कई बचाए गए श्रमिक जीवित रहने के लिए वापस ऋण बंधन में लौट जाते हैं।
    - **उदाहरण**: बिहार के गया जिले में 2021 के एक सर्वेक्षण में पाया गया कि पुनर्वास में देरी के कारण कई बचाए गए मजदूरों ने फिर से बंधुआ मजदूरी में प्रवेश किया।

अंतरराज्यीय प्रवास ने बंधुआ मजदूरी की प्रकृति को कैसे बदल दिया है?

- **ठेकेदार मध्यस्थता:** अंतरराज्यीय प्रवास ने बंधुआ मजदूरी को प्रत्यक्ष नियोक्ता-श्रमिक संबंधों से ठेकेदार-मध्यस्थ भर्ती में स्थानांतरित कर दिया है। श्रम ठेकेदार श्रमिकों की भर्ती करते हैं, अग्रिम राशि प्रदान करते हैं, परिवहन की व्यवस्था करते हैं और उन्हें कई नियोक्ताओं को आवंटित करते हैं, जिससे कार्यस्थल से ऋण संबंध दूर हो जाता है और मुख्य नियोक्ता का कानूनी दायित्व कम हो जाता है।
    - **उदाहरण**: पंजाब में धान की रोपाई के लिए भर्ती किए गए झारखंड के श्रमिकों को अक्सर ग्राम-स्तरीय ठेकेदारों से अग्रिम राशि मिलती है, जो बाद में उन्हें किसानों को उप-ठेके (सब-कॉन्ट्रैक्ट) पर दे देते हैं।
- **संरचनात्मक गुमनामी:** प्रवासी अपरिचित भाषाई, सामाजिक और प्रशासनिक वातावरण में काम करते हैं जहां उनके पास स्थानीय पहचान और समर्थन नेटवर्क की कमी होती है। यह संरचनात्मक गुमनामी सौदेबाजी की शक्ति को कमजोर करती है और ठेकेदारों पर निर्भरता को पारंपरिक गांव-आधारित सामाजिक संबंधों की तुलना में नियंत्रण का अधिक प्रभावी तंत्र बनाती है।
    - **उदाहरण**: केरल के बागानों के लिए छत्तीसगढ़ से आदिवासी श्रमिकों की भर्ती करने वाले ठेकेदार स्थानीय भाषा और प्रशासनिक प्रणालियों से श्रमिकों की अपरिचितता का शोषण करते हैं।
- **अधिकारों का अभाव:** राज्य की सीमाओं को पार करने से प्रवासी श्रमिक स्थानीय स्तर पर स्थापित कल्याणकारी, स्वास्थ्य सेवा और शिकायत तंत्र से कट जाते हैं। पोर्टेबल अधिकारों के इस नुकसान से ठेकेदार आवास, भोजन और ऋण के प्राथमिक प्रदाता बन जाते हैं, जिससे श्रमिकों की निर्भरता और गहरी हो जाती है।
    - **उदाहरण**: ओडिशा-आंध्र प्रदेश के ईंट भट्ठा प्रवासियों ने बताया है कि ठेकेदार कल्याणकारी योजनाओं तक पहुंच को प्रतिबंधित करने और श्रमिकों को काम छोड़ने से रोकने के लिए उनके आधार कार्ड अपने पास रख लेते हैं।
- **एन्क्लेव शोषण (Enclave exploitation):** बंधुआ मजदूरी अब केवल वेतन तक सीमित नहीं है, बल्कि नियोक्ता-नियंत्रित हॉस्टलों, श्रमिक कॉलोनियों और दूरदराज के कार्यस्थलों तक फैल गई है। ये अलग-थलग एन्क्लेव (परिक्षेत्र) श्रमिकों की आवाजाही को प्रतिबंधित करते हैं और श्रम निरीक्षकों, ट्रेड यूनियनों और नागरिक समाज के साथ उनके संपर्क को सीमित करते हैं।
    - **उदाहरण**: सुमंगली योजना के तहत, तमिलनाडु में कताई मिलों ने कई युवा महिला श्रमिकों को कारखाने के छात्रावासों (हॉस्टलों) में सीमित आवाजाही के साथ कैद करके रखा था।
- **क्षेत्राधिकार विखंडन:** अंतरराज्यीय प्रवास स्रोत और गंतव्य राज्यों के बीच जिम्मेदारी को विभाजित करता है, जिससे बचाव, पुनर्वास और मुकदमा कमजोर होता है। अंतर-राज्य प्रवासी कामगार अधिनियम, 1979 और व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और कार्य स्थिति संहिता, 2020 के कमजोर कार्यान्वयन और जिला सतर्कता समितियों के बीच खराब समन्वय के कारण कई मामले प्रशासनिक खामियों की भेंट चढ़ जाते हैं।
    - **उदाहरण**: तमिलनाडु में काम कर रहे बिहार के प्रवासी बंधुआ मजदूरों के बचाव और पुनर्वास में अक्सर अंतर-राज्यीय समन्वय और सत्यापन के कमजोर होने के कारण देरी होती है।

डिजिटलीकरण ने श्रम शोषण के रूपों को कैसे बदल दिया है?

- **एल्गोरिदमिक नियंत्रण:** डिजिटल प्लेटफॉर्म प्रत्यक्ष प्रबंधकीय पर्यवेक्षण के बजाय रेटिंग, स्वीकृति दर (acceptance rates) और स्वचालित कार्य आवंटन के माध्यम से कार्य का प्रबंधन करते हैं। यह अनुशासनात्मक शक्ति को एक दृश्यमान नियोक्ता से एक अपारदर्शी एल्गोरिदम में स्थानांतरित कर देता है, जिससे वेतन, कार्य आवंटन और निष्क्रियकरण (deactivation) पर निर्णयों पर सवाल उठाना या विरोध करना मुश्किल हो जाता है।
    - **उदाहरण**: स्विगी और जोमैटो पर फूड डिलीवरी राइडर्स ने बिना किसी मानवीय स्पष्टीकरण के स्वचालित धोखाधड़ी-पहचान प्रणालियों के माध्यम से अचानक आईडी निष्क्रिय (deactivate) किए जाने की सूचना दी है।
- **डिजिटल निगरानी:** जीपीएस ट्रैकिंग, व्यवहार विश्लेषण और प्रदर्शन स्कोरिंग पारंपरिक कार्यस्थल के बाहर भी श्रमिकों की निरंतर निगरानी को सक्षम बनाते हैं। एल्गोरिदमिक निगरानी प्रोत्साहन और दंड के माध्यम से श्रमिक व्यवहार को आकार देती है, जो प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण के बिना भी नियोक्ता के नियंत्रण को बढ़ाती है।
    - **उदाहरण**: ओला और उबर ड्राइवरों ने रिपोर्ट दी है कि स्वीकृति दर एल्गोरिदम सवारी को अस्वीकार करने पर दंडित करते हैं, जो प्रभावी रूप से उन्हें निरंतर प्रदर्शन निगरानी में रखते हैं।
- **रोजगार का गलत वर्गीकरण:** डिजिटल प्लेटफॉर्म श्रमिकों को कर्मचारियों के बजाय "भागीदार (पार्टनर)" या "स्वतंत्र ठेकेदार" के रूप में वर्गीकृत करते हैं। यह संविदात्मक व्यवस्था उनके काम पर महत्वपूर्ण नियंत्रण रखने के बावजूद, उन्हें न्यूनतम मजदूरी, भविष्य निधि और औद्योगिक विवाद तंत्र जैसे वैधानिक सुरक्षा उपायों से बाहर कर देती है।
    - **उदाहरण**: सामाजिक सुरक्षा संहिता, 2020 ने गिग श्रमिकों के लिए एक अलग श्रेणी पेश की, यह मानते हुए कि प्लेटफॉर्म श्रमिक काफी हद तक पारंपरिक नियोक्ता-कर्मचारी संबंधों से बाहर आते हैं।
- **जोखिम हस्तांतरण:** डिजिटल प्लेटफॉर्म केवल पूर्ण किए गए कार्यों के लिए भुगतान करते हैं, जिससे व्यवसायिक जोखिम जैसे निष्क्रिय समय (idle time), ईंधन लागत, वाहन रखरखाव और मांग में उतार-चढ़ाव श्रमिकों पर स्थानांतरित हो जाते हैं। यह स्वरोजगार से जुड़ी स्वायत्तता प्रदान किए बिना काम की तीव्रता को बढ़ाता है और आय की सुरक्षा को कम करता है।
    - **उदाहरण**: 2021 के फेयरवर्क इंडिया (Fairwork India) अध्ययन में पाया गया कि डिलीवरी के बीच बिना भुगतान वाले प्रतीक्षा समय का हिसाब लगाने के बाद डिलीवरी श्रमिक अक्सर राज्य की न्यूनतम मजदूरी से भी कम कमाते हैं।
- **कार्यबल का विखंडन:** प्लेटफॉर्म श्रमिक बिना किसी सामान्य कार्यस्थल के पूरे शहरों में बिखरे हुए हैं, जिससे उनकी बातचीत और सामूहिक संगठन सीमित हो जाता है। ऐप-आधारित शिकायत प्रणालियां विवादों को व्यक्तिगत बना देती हैं, जिससे सामूहिक सौदेबाजी और संघीकरण (unionisation) कमजोर हो जाता है।
    - **उदाहरण**: दिल्ली और बेंगलुरु में ड्राइवर यूनियनों ने प्लेटफॉर्म श्रमिकों को संगठित करने के लिए संघर्ष किया है, जो साझा कार्यस्थलों के बजाय काफी हद तक अनौपचारिक व्हाट्सएप समूहों के माध्यम से समन्वय करते हैं।